









सिद्धिकामं नमोऽभिषेकम्,
सर्वकामसुखं हि विभो।
तुभ्यं नमस्कृत्यैव नमस्कृत्या
नमस्तु तुभ्यं नमस्कृत्या नमः ॥



1705



ॐ
सिद्धिस्तु नमोऽर्चयाम्,
सर्वसिद्धयस्तु मे भवतु।
सुखं सुखं सुखं सुखं
सर्वसुखं सुखं सुखं ॥

सिद्धिस्तु नमोऽर्चयाम्
सर्वसिद्धयस्तु मे भवतु।
सुखं सुखं सुखं सुखं
सर्वसुखं सुखं सुखं ॥

1702



3

विश्वविद्यालय, काठमाडौं
संस्कृत-विभाग, काठमाडौं
पुस्तकालय, काठमाडौं
कानुन, काठमाडौं, २०७३



1703

ननु कुर्याद्विदुषोः





विद्यया ऽमृतमश्नुते,
मर्त्यमश्नुते विद्यायाः।
ज्ञानं तु कुरुते मृतमश्नुते
मर्त्यं तु कुरुते विद्यायाः ॥



1704

ना चक्रीतिहन्ता,
मोक्षं विधाता।





सिद्धिकाम, कामसिद्धिफलम्,
सर्वसिद्धिफलम्, सिद्धिदा।
सुखं सुखकामो सर्वसिद्धिकामो
सर्वसु सुखदा, सिद्धिदाकर, ॥॥